# अलकशतक और तिलशतक ।

अर्थात्

शृङ्गाररस भरे अनेक युक्ति संयुक्त अलक और तिल पर केवल दोहा छन्दों में दो शतक ।

बिलग्राम (अवध) बासी सैयद मुबारकअली उपनाम मुबारक कवि प्रणीत ।

जिसको डुमराँवनिवासी नकछेदी तिवारी उपनाम अजान कवि ने रसिकजनों के चित्त विनोदार्थ प्रकाशित किया ।



बबुक कूप रसरी अलक तिल सुचरस दृग बेल ।
बारी बार सिँगार की सींचत मनमथ छैल ॥ १ ॥

अधूरा देखने से न देखना अच्छा ।

काशी ।

भारतजीवन यन्त्रालय में मुद्रित हुआ ।

सन् १८९१ ई० ।